सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र
3, 71, 438
प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली
भारत की एकमात्र बाल पत्रिका

ओ बलिदानी

ओ बलिदानी, ये कुर्बानी,
व्यर्थ नहीं जाने पाएगी।
बिजली बन कर चमक उठेगी,
जब-जब बदली छाएगी।
ये है वही शहादत जिसको,
मिट्टी शीश झुकाती है।
यह है वही प्रभाती जिसको,
धरती माता गाती है।
जो भी हवा चलेगी,
उसमें इसकी रंगत आएगी।
वह चट्टानों पर जन्मी है,
शिखर-शिखर से खेली है।
पर्वत-पर्वत डोल रही है,
फिर भी नहीं अकेली है।
वहाँ-वहाँ आकाश झुकेगा,
जहाँ-जहाँ यह जाएगी।
जात, पात, औ दीन धर्म के
मंदिर-मस्जिद गुरुद्वारों के
छोटे-छोटे घेरों से,
यह तुझको बाहर ले आई
कितने घने अंधेरों से
यह ही तो यह किरन परी
जो भोर खींच कर लाएगी।

हमको आगे आना है

गहरा है अंधियारा, दिया जलाना है।
हमको, तुमको, सबको आगे आना है।
ऐसे बढ़ो कि आंधी लोहा मान ले,
ऐसे पढ़ो कि पुस्तक तुमसे ज्ञान ले,
सागर की गहराई मन में ढाल कर-
ऐसे चढ़ो कि पर्वत भी पहचान ले।
मंजिल तो बढ़ने का एक बहाना है,
हमको, तुमको, सबको आगे आना है।
लहरें उठती गिरती और संभलती हैं,
ऋतुएँ भी अपने परिधान बदलती हैं,
झुक जाता है एक दिया तूफानों में-
उसके पीछे कई मशालें जलती हैं।
जहाँ नहीं आया परिवर्तन लाना है।
हमको, तुमको, सबको आगे आना है,
कुछ जंजीरें टूटी हैं, कुछ शेष हैं,
अब भी भारत माँ के बिखरे केश हैं,
जिधर नजर जाती, आंसू की भीड़ है।
हम पर तुम पर आँख लगाए देश है।
हम न रुकेंगे आगे गया जमाना है।
हमको, तुमको, सबको आगे आना है।